क्या परिवार अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहा है

रेणुका पामेचा

हमारे समाजशास्त्र में परिवार के महत्व और भूमिका की बहुत चर्चा है। परिवार में रहकर ही मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होता है और वह एक सामाजिक प्राणी बनता है। परिवार व्यक्ति को विशेषकर स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान करता है। सुरक्षा का एक दूसरा पहलू भी है जिसे अब उजागर करने का समय आ गया है।

व्यवहार में लड़की देखती है कि उसे सपने देखने का हक़ नहीं है। व्यवसाय चुनने व फैसला करने का हक़ नहीं है। वह देखती है कि—

1. माता-पिता मिलकर कन्या भ्रूण हत्या करते हैं।
2. बालिका-वध भी हो ही रहा है। बड़े गर्व से कहा जाता है, ''हमारा गांव ऐसा है जहां एक भी बारात नहीं आई।''
3. ऐसे भी परिवार हैं जो बच्चियों की जनगणना नहीं करवाते। यानी वे इंसान नहीं हैं।
4. परिवार में लड़के को सब सुख-सुविधाएं दी जाती हैं। सारी मेहनत लड़की से करवाई जाती है। शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण में लड़की की ओर लापरवाही परिवार के भीतर ही देखने में आती है।
5. बालिका के व्यक्तित्व के विकास, उसके अपने वजूद की तरफ परिवार का कोई ध्यान नहीं रहता। जल्दी से जल्दी उसका ब्याह करके बोझ उतारने की फिक्र मां-बाप को रहती है।
6. नन्हीं बालिका को नन्हीं मजदूर बनाकर शिक्षा व विकास के सारे रास्ते बंद कर दिए जाते हैं।

सोचने की बात यह है कि प्यार से, सुख-सुविधाओं से वंचित बालिका एक स्वस्थ, चिंतनशील महिला कैसे बन सकती है। समाज के आधे हिस्से को पीछे रखने से एक प्रगतिशील समाज नहीं बन सकता। अगर परिवार में लड़की पर ज़ुल्म ढाया जा रहा है तो इस बुराई को दूर करने का उपाय हमें तुरंत करना है।

ससुराल में लड़की

एक ब्याहता के रूप में लड़की को कम अपमान एवं उत्पीड़न नहीं सहना पड़ता है। उसको जो ताने सुनने पड़ते हैं उनमें से कुछ नीचे सुचीबद्ध किए

एक अहम सवाल ?

गए हैं—

1. कंगालों के घर से लड़की लाए। हमारे तो भाग्य ही फूट गए।
2. हमारे लड़के को तो हज़ारों अच्छे रिश्ते आ रहे थे। न जाने कैसे हम इनके जाल में फंस गए।
3. हमारे साथ धोखा हुआ है। मोटर और रंगीन टी.वी. का वादा किया था। बाद में मुकर गए।
4. हम तो सोच रहे थे भाई इंजीनियर है। खुद पिता की उम्र भर की कमाई है। अच्छा दहेज देंगे। ऐसे ही बिदा कर दिया।
5. तीज-त्यौहार पर मिठाई भी नहीं भेजते। हमारी तो मोहल्ले में नाक कट गई।
6. बहू के बच्चा हुआ। सास-ननद को साड़ी तक नहीं। अपनी लड़की को तो सारी ज़िंदगी देंगें। मौके पर भी सास को नहीं दिया।
7. कैसा घटिया सामान दिया है। अलमारी देनी थी तो गोदरेज की देते।
8. लड़की सुशील और पढ़ी लिखी है तो क्या इसकी पूजा करें। छोटे-छोटे लोगों के दहेज में इतना सामान आ जाता है कि घर बस जाता है।
9. इसको तो काम करना भी नहीं आता। मां-बाप ने कुछ सिखाया ही नहीं।
10. महारानी जब देखो बीमारी का बहाना बनाती है। काम नहीं होता तो अपने बाप से कहकर 2-4 नौकर और उनका खर्च क्यों नहीं मंगवा लेती।
11. महारानी जी को इतनी गर्मी लगती है तो फिर अपने बाप से कहकर ए.सी. लगवा ले।
12. बहू, तुम हमारा पीछा छोड़ दो। हमारे लड़के के तो हज़ारों रिश्ते आ जाएंगें।

इस तरह की हज़ारों चुभती हुई बातें तीर की तरह गहरा घाव करती हैं। लड़की घुटती है, परेशान होती है, इससे तकलीफ़ देने वाली बात यह है कि पति बहुत ही दब्बू किस्म के इंसान होते हैं। पत्नी के संबंध में आज्ञाकारी पुत्र होते हैं और पत्नी पर होने वाले हर ज़ुल्म में पूरी तरह शामिल होते हैं।

किस विश्वास के सहारे हमने विवाह-संस्था को इतना महत्व दिया हुआ है कि लड़की की शादी करके ही माता-पिता अपनी मुक्ति समझते हैं। हर लड़की के मन में बिठा दिया जाता है कि ब्याह तो होना ही चाहिए और उसे हर हालत में ससुराल में समझौता करना चाहिए।

अगर हमें स्वस्थ समाज की रचना करनी है तो परिवार के ढांचे मे आई विसंगतियों की चर्चा ज़रूरी है। बेटियों को घुटने-मरने से बचाना है तो परिवार की भूमिका की चर्चा ज़रूरी है। परिवार के भीतर की हिंसा समाज व व्यवस्था की हिंसा से ज़्यादा ख़तरनाक है। □